भारतीय इतिहास

के कुछ विषय भाग - 1

ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ
(हड़प्पा सभ्यता)

विद्या दृष्टि

The Vision Of Education

CLASSES AVAILABLE :-

6th to 10th

- Maths
- Science
- English
- Sst

11th & 12th

- Pol. Science
- History
- Economics
- Accounts
- Maths
- English
- sociology

C-136A, Laxmipark, Near M. S. Memorial Public School, Nangloi, Delhi - 110041

M H Rabbani : 8700467219

(Chief Mentor & Coordinator)

@vidyadrishti

कालखंड का संकेत

👉 **B C**
- Before christ
- ईसामसीह के जन्म से पहले
- ई. पू.

👉 **B C E**
- Before common era
- B C की जगह इसका प्रयोग

👉 **B P**
- Before present
- B C E की जगह इसका प्रयोग

👉 **A D**
- Anno Domini
- ईसामसीह के जन्म के वर्ष से
- ई.

👉 **C E**
- Common era
- A D की जगह प्रयोग

कुछ महत्वपूर्ण पद

👉 **जीवाशम**
- पेड़ पौधे एवं जीवों के अवशेष।
- कठोर पत्थर के रूप में चट्टानों में दबे पाए जाते हैं।

👉 **पुरावस्तु**
- प्राचीन काल के लोगों के जीवन से संबंधित वस्तु।
- जैसे :- आवास, मृदभाण्ड, आभूषण, औजार, मोहर

👉 **पुरातात्विक साक्ष्य**
- वैसी पुरावस्तुएं जिनका प्रयोग इतिहास के अध्ययन में किया जाता है।

👉 **पुरातत्त्वविद**
- वह व्यक्ति जो पुरातात्विक साक्षयो की व्यख्या करके इतिहास की जानकारी देता है।

👉 **पुरावनस्पतिज्ञ**
- एक विशेष प्रकार का पुरातत्वविद जो आहार संबंधित आदतों की व्यख्या पुरातात्विक साक्षयों के आधार पर करता है।
- ये प्राचीन वनस्पतियों के अध्ययन के विशेषज्ञ होते हैं।

👉 **पुराप्राणीविज्ञानी**
- प्राचीन जीवों के अवशेष के अध्ययन के विशेषज्ञ।

पूर्ववर्ती हड़प्पा और विकसित हड़प्पा

👉 **समानता**
- भोजन संबंधित आदतें एक जैसी।
- पेड़ पौधों से प्राप्त उत्पाद, जानवर एवं मछली का प्रयोग भोजन के रूप में।

👉 **असमानता**
- पहले की संस्कृतियों की मृदभाण्ड शैली विशिष्ट
- प्रारम्भिक सभ्यता में छोटी बस्तियां के साक्ष्य अथार्त ग्रामीण सभ्यता थी जबकि हड़प्पा नगरीय सभ्यता।

by - M H Rabbani

■ **हड़प्पा संस्कृति से पूर्व संस्कृतियों के होने के साक्ष्य** प्राप्त हुए हैं, जैसे कृषि, पशुपालन और शिल्पकारी के साक्ष्य।

■ कुछ स्थलों पर बड़े पैमाने पर इलाकों में जलाए जाने के संकेतों से तथा कुछ अन्य स्थलों के त्याग दिए जाने से ऐसा प्रतीत होता है कि **आरम्भिक हड़प्पा तथा हड़प्पा सभ्यता के बीच क्रमभंग** था।

सिंधु घाटी सभ्यता

👉 **हड़प्पा सभ्यता :-** सबसे पहले हड़प्पा नगर की खोज हुई, इसलिए इसे हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया।

👉 **समय :- 2600 ई. पू. से 1900 ई. पू.**

👉 **प्रमुख नगर :-** हड़प्पा और मोहनजोदड़ो

👉 **प्रसार -** पाकिस्तान,अफ़ग़ानिस्तान, भारत [सिंध, ब्लूचिस्तान, गुजरात, राजस्थान]

👉 **जानकारी के स्त्रोत :-**

- मुहरें, मनकें, बाट, पत्थर के फलक
- पकी हुई ईंट, आभूषण, अस्थियाँ
- अनाज के दानों के अवशेष

👉 **आरम्भिक हड़प्पा :-** सिंधु घाटी सभ्यता से पहले की सभ्यता, जिसे पूर्ववर्ती हड़प्पा भी कहाँ जाता है

👉 **परवर्ती हड़प्पा सभ्यता :-** सिंधु घाटी सभ्यता के बाद की सभ्यता।

👉 **विकसित हड़प्पा सभ्यता या संस्कृति :-** सिंधु घाटी सभ्यता को ही कहते हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि

👉 **विशेषताएं**

- रहस्यमयी लिपि, आज तक पढ़ी नहीं जा सकी।
- यह लिपि वर्णमलीय नहीं थी क्यूंकि इसमें चिन्हो की संख्या लगभग 375 से 400 के मध्य थी।
- चिन्हो के साथ चित्रों (जानवर) का प्रयोग।
- यह लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।
- सबसे लम्बे अभिलेख में लगभग 26 चिन्ह हैं।

👉 **लिपि का प्रयोग**

- मोहर पर
- आभूषण पर
- ताँबे के औजार पर
- मर्तबानों पर
- मिट्टी की लघुपट्टीकाओं पर

(अतः साक्षरता का स्तर व्यापक)।

👉 हड़प्पा मुहरों पर लिपि के साथ जानवरों के चित्र ताकि अनपढ़ लोग भी पढ़ सकें।

सिंधु घाटी सभ्यता में शिल्प उत्पादन

शिल्प उत्पादन कार्यों में विविधता

- मनके बनाना, संख कि कटाई, धातुक्रम, बाट निर्माण
- मोहर निर्माण (हड़प्पा सभ्यता कि विशिष्ट पुरावस्तु)
- मिट्टी का बर्तन निर्माण, आभूषण निर्माण
- सुंदर भवन, स्नानागर और नालियों का निर्माण

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
by - M H Rabbani

शिल्प निर्माण में कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त पदार्थ

(1) मिट्टी

- चिकनी मिट्टी
- पक्की मिट्टी

(2) विभिन्न प्रकार के पत्थर जैसे

- **कार्नीलियन :-** लाल रंग का सुंदर पत्थर
- **लाजवर्दमणी :-** नीले रंग का कीमती पत्थर
- **सेलखड़ी :-** मुलायम पत्थर
- जेस्पर, स्फाटिक, क्वाटर्ज इत्यादि

(3) विभिन्न प्रकार की धातुएं जैसे

- तांबा
- पीतल
- कांसा
- सोना

(4) संख

- प्रयोग चूड़ियों, करछियों और पचिकारी बनाने में।
- **नागेश्वर, बालाकोट** के समीप संखों से चूड़ियाँ, करछियां तथा पचिकारी का निर्माण होता था।
- यहाँ से निर्मित सामानो तथा चंहूदड़ो एवं लोथल से निर्मित समानों को मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसे बड़े नगरों में लाया जाता था।

(5) लकड़ी, फयान्स

(6) लेप की समाग्री

- दो पत्थरों को जोड़ने या पत्थरों के चूर्ण को मिलाकर विभिन्न प्रकार के सांचों में अनेक वस्तुओं को ढलने के लिए प्रयोग किया जाता था।

(7) चाक

- मिट्टी का बर्तन बनाने के लिए कुम्हार द्वारा प्रयोग किया जाता था।

(8) घिसाई, पॉलिश और छिद्र करने के औजार का प्रयोग।

उत्पादन केंद्रों की पहचान

👉 पुरातात्वविद समान्यतः निम्नलिखित पदार्थों के आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता के उत्पादन केंद्रों की पहचान करते हैं :-

(1) कच्चा माल :- संख, तांबा, अयस्क
(2) औजार
(3) अपूर्ण वस्तुओं के अवशेष
(4) कूड़ा करकट

👉 **कूड़ा करकट शिल्प कार्यों के सबसे अच्छे संकेतक माने जाते हैं।**

👉 वस्तु निर्माण की प्रक्रिया में छोटे अवशिष्ट टुकड़े कार्यस्थल पर ही रह जाते हैं जबकि बड़े अवशिष्ट टुकड़े दूसरे वस्तुओं के nirman में प्रयोग कर लिया जाता है।

👉 ये छोटे - छोटे टुकड़े इस ओर संकेत करते हैं कि मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसे बड़े शहरों के अतिरिक्त छोटे - छोटे केंद्रों पर भी शिल्प उत्पादन किया जाता था।

YouTube
@vidyadrishti
by - M H Rabbani

कच्चा माल प्राप्त करने से संबंधित नीति

सिंधु घाटी सभ्यता के लोग कच्चा माल प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाते थें :-

(1) स्थानीयता

- मिट्टी स्थानीय स्तर पर उपलब्ध होती थी।

(2) आयात

- पत्थर, लकड़ी, धातु जलोढक मैदान से बाहर के क्षेत्रों से मगाने पड़ते थें।
- **लाजवर्द मणी :- शोर्तुघई (अफ़ग़ानिस्तान)**
- **कार्नीलियन :- लोथल (गुजरात)**
- **सेलखड़ी :- उत्तरी गुजरात एवं दक्षिणी राजस्थान**
- **धातु :- राजस्थान**

(3) अभियान

- राजस्थान के खेतड़ी से तांबा प्राप्त करने के लिए तथा दक्षिण भारत से सोना प्राप्त करने के लिए हड़प्पावासी अभियान भेजा करते थें।
- खेतड़ी क्षेत्र से मिले साक्ष्यों को पुरातत्त्वविदों ने **गणेशवर-जोधपुरा संस्कृति** का नाम दिया है।
- यहाँ तांबे से निर्मित अनेक वस्तुओं तथा कुछ विशेष प्रकार के मृदभाण्ड के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं जो कि हड़प्पाई मृदभाण्डों से अलग हैं।

(4) बस्तियों की स्थापना

- **नागेशवर और बालाकोट** से संख की प्राप्ति के लिए।

(5) सुदूर क्षेत्रों से सम्पर्क

- सुदूर क्षेत्रों से सम्पर्क के द्वारा भी कच्चा माल प्राप्त किया जाता था। जैसे तांबा सम्भवतः अरब प्रायद्वीप के दक्षिण - पश्चिम छोर पर स्थित **ओमान** से लाया जाता था।

(6) माल ढूलाई के साधन

- उस समय **बालगाड़ियाँ** संभवतः परिवहन का मुख्य साधन थीं।
- इसके अतिरिक्त यह भी संभावना है कि सिंधु तथा अन्य नदियों के मार्गों तथा तटीय मार्गों का भी प्रयोग किया जाता था।

मनका निर्माण

👉 **प्रयुक्त पदार्थ**

(1) पक्की मिट्टी

(2) पत्थर :- कार्नीलियन, लाजवर्दमणी, सेलखड़ी, जैस्पर, स्फटिक, क्वार्टज

(3) धातु :- तांबा, पीतल, काँसा, सोना

(4) संख, लकड़ी, फयाँन्स

👉 **आकार**

(1) चक्राकार (2) बेलनाकार (3) गोलाकार (4) खंडित

👉 **मनकों को बनाने क़ी प्रक्रिया**

(i) मनकों को बनाने की प्रक्रिया प्रयुक्त पदार्थ के अनुसार भिन्न थी । सेलखड़ी जो एक बहुत मुलायम पत्थर है, पर आसानी से कार्य हो जाता था। इस पर मनके सेलखड़ी चूर्ण के लेप को साँचे में ढाल कर तैयार किए जाते थे।

(ii) इससे ठोस पत्थरों से बनने वाले केवल ज्यामितीय आकारों के विपरीत विविध आकारों के मनके बनाए जा सकते थे। सेलखड़ी के सूक्ष्म मनके बनाने की तकनीक जान पाने में पुरातत्वविद सफल नहीं हुए हैं।

by - M H Rabbani

(iii) कार्नीलियन का लाल रंग, पीले रंग के कच्चे माल तथा उत्पादन के विभिन्न चरणों में मनकों को आग में पकाकर प्राप्त किया जाता था।

(iv) पत्थर के पिंडों को पहले अपरिष्कृत आकारों में तोड़ा जाता था और फिर बारीकी से शल्क निकालकर इन्हें अंतिम रूप दिया जाता था।

(v) घिसाई पॉलिश और इनमें छेद करने के साथ ही यह प्रक्रिया पूरी होती थी।

🔹 **मनके बनाने में सबसे ज्यादा सेलखड़ी** नामक पत्थर का प्रयोग होता थै क्यूंकि यह मुलायम होता था।

🔹 कुछ मनके दो या दो से अधिक पत्थरों को आपस में जोड़कर बनाए जाते थें।

🔹 मनकों पर **चित्रकारी** भी होती थी।

🔹 मनकों में **छेद करने के लिए विशेष उपकरणों** का प्रयोग किया जाता था। जिनके **अवशेष चन्हुदड़ो, लोथल और धौलावीरा** से प्राप्त हुए हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता के सुदूर क्षेत्रों से सम्पर्क

■ **ओमान से संपर्क**

👉 **ताँबा**

🔹 हड़प्पावासी तांबा अरब प्रायद्वीप के दक्षिण - पश्चिम छोर पर स्थित ओमान से मँगवाया करते थें।

🔹 रसायनिक विशलेषण से स्पष्ट हुआ है कि ओमान के ताँबे तथा हड़प्पाई पुरावस्तुओं दोनों में निकल के अंश हैं। इस आधार पर दो निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं :-

(1) दोनों का एक समान उदभव

(2) ओमान एवं हड़प्पा सभ्यता के बीच व्यापारिक संबंध

👉 **हड़प्पाई मर्तबान**

🔹 यह ओमान से प्राप्त हुआ है।

🔹 रिसाव को रोकने के लिए इसके ऊपर काली मिट्टी की एक मोटी परत चढी होती थी।

🔹 ऐसा माना जाता है कि समानों को भरकर हड़प्पावासी ओमान ले होंगे उसके बदले ताँबा लेकर आते होंगे।

■ **सुदूर क्षेत्रों से संपर्क के अन्य संकेतक**

(a) हड़प्पाई मुहर (b) बाट (c) मनकें (d) पासा

🔹 सुदूर क्षेत्रों से हड़प्पा की इन वस्तुओं के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

■ **मेसोपोटामिया से संपर्क**

👉 मीपोटामिया के लेख

🔹 मेसोपोटामिया के लेखों में विभिन्न क्षेत्रों के लिए प्रयुक्त शब्द :-

(a) ओमान — मगान

(b) बहरीन द्वीप — दिलमुन

(c) हड़प्पा स्थल — मेलुहा (नाविकों का देश)

🔹 यह अनुमान है कि ओमान, बहरीन या मेसोपोटामिया से संपर्क सामुद्रीक मार्ग से रहा होगा क्यूंकि मीपोटामिया के लेख मेलुहा को नविकों का देश कहते हैं। इनमें मेलुहा से प्राप्त उत्पादों - कर्नीलियन, लाजवर्दमणी, ताँबा, सोना तथा विविध प्रकार कि लकड़ियों का उल्लेख है इसके एलावा मुहरों पर जहाजों तथा नावों के चित्र अंकित हैं।

🔴 **निष्कर्ष :-** उपर्युक्त प्रमाण व्यापारिक संबंध तथा हड़प्पावासियों के सुदूर क्षेत्रों से संपर्क को दर्शाते हैं।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
YouTube
@vidyadrishti by - M H Rabbani

सिंधु घाटी सभ्यता - व्यापारिक क्षेत्र में प्रगति

- आंतरिक व्यापार काफी उन्नत स्थिति में था।
- मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा व्यापार के प्रमुख केंद्र, जहाँ छोटे और बड़े सभी प्रकार के बाट पाए गए हैं।
- बाटों पर सरकारी नियंत्रण कठोर होता था और ये इराक के बाटों से ज्यादा परिशुद्ध थें।
- माप तौल कि 16 इकाईयां प्रचलन में थी और तराजू का भी प्रयोग होता था।
- व्यापरिक संबंध मिस्त्र, चीन और मेसोपोटामिया से था।
- व्यापार जल एवं स्थल मार्ग दोनों से होता था।
- ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि दूसरे देशों से टिन, ताँबा तथा बहुमूल्य वस्तुए एवं रत्न मँगवाया करते थें।

👉 निष्कर्ष :- आंतरिक व्यापार के साँथ - साँथ विदेश व्यापार उन्नत स्थिति में था।

समकालीन कास्ययुगीन सभ्यता

(a) मिस्त्र की सभ्यता
(b) मेसोपोटामिया का सभ्यता
(c) सिंधु घाटी सभ्यता
(d) चीन की सभ्यता

👉 **इन सभ्यताओं में निम्नलिखित समानताएं पायी जाती थीं :-**

(1) चित्राक्षर लिपि
(2) सूत कातना, कपड़ा बुनना
(3) मिट्टी के रंगीन बर्तन बनाना
(4) लोहे के प्रयोग की जानकारी नहीं
(5) घर के बर्तन और हथियार बनाने में ताँबे और पीतल का प्रयोग
(6) पक्की ईंटों का प्रयोग
(7) नागरिकता के अनेक नियमों से लोग परिचित

👉 **उपरोक्त आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला जा सकता है :-**

(a) आर्थिक एवं समाजिक जीवन एक जैसा
(b) राजनीतिक एवं धार्मिक क्षेत्र में भी समानता

कास्ययुगीन सभ्यताओं के बीच व्यापारिक संबंध

- एक सभ्यता की वस्तुओं के अवशेष दूसरे सभ्यताओं से प्राप्त हुए हैं।
- सिंधु सभ्यता की अनेक वस्तुएं मेसोपोटामिया से प्राप्त हुईं हैं।

(a) इससे पता चलता है कि मेसोपोटामिया के सुमेरियन लोगों के साँथ सिंधु सभ्यता के लोगों का संबंध था।

(b) सुमेरियन लोगों का एक ओर चीन के साथ जबकि दुसरी ओर मिस्त्र के साँथ भी व्यापारिक संबंध था।

(c) इसप्रकार आपसी मेल - जोल का एक चक्र सा बना था जिससे इन सभ्यताओं ने एक दूसरे से सीखा।

(d) इस **व्यापारिक मेल जोल का समानता लाने में बड़ा योगदान** था।

by - M H Rabbani

सिंधु घाटी सभ्यता में जीवन निर्वाह

👉 **जीवन निर्वाह के तरीके**

(1) कृषि (2) पशुपालन (3) शिकार

👉 **हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त अनाज के साक्ष्य**

- हड़प्पा स्थल से मिले अनाजों में गेहूं, जौ, बाजरा, दाल, सफ़ेद चना तथा तील सम्मिलित हैं।
- **बाजरे** के साक्ष्य **गुजरात** से प्राप्त
- चावल का प्रयोग सम्भवतः कम किया करते होंगे।

👉 **हड़प्पा सभ्यता में जानवर**

- भेड़, बकरी, भैंस, सूअर इत्यादि पालतू जानवर थें।
- वराह सूअर, हिरण, घड़ियाल के बारे में स्पष्ट नहीं कि पालतू थें या शिकार किए गयें थें।
- अतः इससे पता चलता है कि हड़प्पा निवासी पशुओं को पालते थें। जंगली प्रजातियों का शिकार स्वयं करते थें या अन्य आखेटक - समुदायों से इनका मांस प्राप्त करते थें। इसका साक्ष्य प्राप्त नहीं हुआ है।

👉 **कृषि संबंधित अवशेष**

- **मृदा से बने हल के प्रतिरुप :-** चोलिस्तान (पाकिस्तान), बनावली (हरयाणा)
- **जुते हुए खेत के साक्ष्य :-** कालीबंगन (राजस्थान)[प्रारम्भिक हड़प्पा से संबंधित साक्ष्य भी कालीबंगन से प्राप्त हुए हैं]
- **नहरों के अवशेष :-** शोर्तुघई (अफ़ग़ानिस्तान)
- **जलाशय के साक्ष्य :-** धौलाविरा (गुजरात)

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

👉 **सिचाई के प्रमुख साधन**

- नहर
- कुआँ
- जलाशय

👉 **कृषि से संबंधित अनुमान**

- कृषि विधियों के बारे में अनुमान लगाया जाता है।
- कृषि कार्यों में सम्भवतः बैल का प्रयोग किया जाता होगा।

साक्ष्य - मानचित्र

(1) कृषि के साक्ष्य :- बनावली, कालीबंगन, धौलावीरा

(2) शिल्प उत्पादन के साक्ष्य :- नागेश्वर,बालाकोट, चन्हुदड़ो,लोथल, मोहनजोदड़ो

(3) कच्चा माल के साक्ष्य :- नागेश्वर, बालाकोट

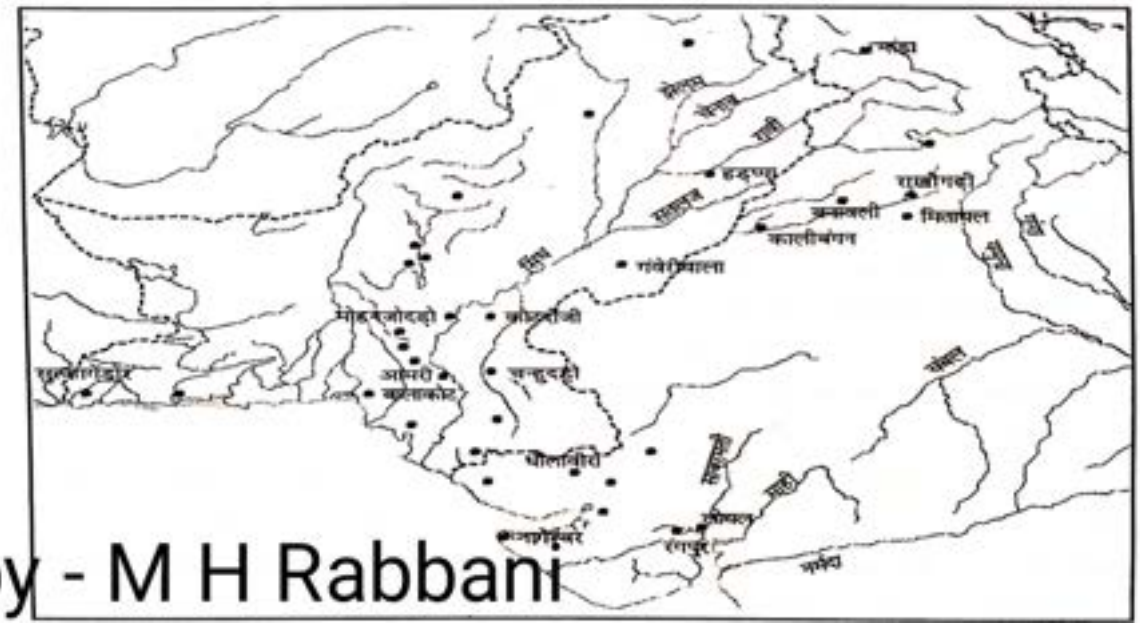

by - M H Rabbani

सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख केंद्र

हड़प्पा

👉 **पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में** लाहौर से 100 मिल दूर मांटगुमरी जिला में स्थित।

👉 **सबसे पहले खोजा गया**। विशाल नगर, मोहनजोदड़ो से भी बड़ा।

👉 **R. B. Dyaram sahni :-** उत्तरी प्रदेश कि राजधानी

Dr whiller :- शत्रुओं से रक्षा के लिए चारो ओर दीवार

सुव्यवस्थित नगर

- सीधी सड़कें, वायु नगर को स्वयं साफ कर देता था।
- रात को रौशनी का प्रबंध
- जलनिकासी व्यवस्था अच्छी
- प्रत्येक घर के बाहर कूड़ेदान

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

हड़प्पा नष्ट जबकि मोहनजोदड़ो संरक्षित

- ASI के पहले डायरेक्टर जनरल अलेक्जेनडर कनिंघम थें जिन्हे भारतीय पुरातत्त्व का जनक माना जाता है।
- इनके अनुसार ईंट चुराने वालो ने इसे नष्ट कर दिया जबकि मोहनजोदड़ो संरक्षित रहा।

बनावली

- हिसार (हरयाणा) में स्थित
- पूर्ववर्ती हड़प्पा और विकसित हड़प्पा दोनों के अवशेष प्राप्त।

चंन्हुदरो

- सिंध प्रान्त (पाकिस्तान) में मोहनजोदड़ो से 130 km दक्षिण की ओर स्थित

लोथल

- गुजरात के कठियावाड़ में स्थित।
- समुद्र के निकट, अतः समुद्री व्यापार का एक बड़ा केंद्र रहा होगा।

कालीबंगन

- राजस्थान में स्थित
- पूर्ववर्ती हड़प्पा तथा विकसित हड़प्पा दोनों के अवशेष प्राप्त।

YouTube
@vidyadrishti
by - M H Rabbani

मोहनजोदड़ो

विद्या दृष्टि

👉 **एक नियोजित शहरी केंद्र**

(क) मोहनजोदड़ो **सबसे प्रसिद्ध पुरास्थल** है। यह एक नियोजित शहरी केंद्र था।

(ख) **शहर दो भागों में विभाजित** था एक छोटा लेकिन ऊंचाई पर बनाया गया था और दूसरा कहीं बड़ा भाग लेकिन नीचे बनाया गया था। इन्हें क्रमशः दुर्ग और निचला शहर का नाम दिया है। दुर्ग को दीवार से घेर कर निचले शहर से अलग किया गया था।

(ग) निचले शहर को भी दीवार से घेरा गया था।

(घ) कई भवनों को ऊँचे चबूतरे पर बनाया गया था जो नींव का कार्य करते थे। एक बार चबूतरों के यथास्थान बनने के बाद शहर का सारा भवन-निर्माण कार्य चबूतरों पर एक निश्चित क्षेत्र तक सोमित था। इस प्रकार सम्भवतः पहले बस्ती का नियोजन होता था फिर उसके अनुसार कार्यान्वयन

(ङ) नियोजन :-

- निर्माण का पहले नियोजन किया गया था और फिर उसको लागू किया गया था क्योंकि इसमें चबूतरों का निर्माण करने के पश्चात् भवन निर्माण कार्य चबूतरों पर एक निश्चित क्षेत्र तक सिमित था।

(च) ईंटों का निर्माण :-

- ईंटों को धूप में सुखाकर अथवा भट्ठी में पकाकर बनाया जाता था। उनका निश्चित आकार होता था जिसमें लंबाई और चौड़ाई ऊँचाई की क्रमशः चार गुनी और दोगुनी होती थी। यह भी नियोजन का एक लक्षण था।

👉 **नालों का निर्माण**

(क) जल निकास प्रणाली उत्तम थी क्योंकि गलियाँ और सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं।

(ख) गृह स्थापत्य :-

- निचला शहर आवासीय भवनों के रूप में बसाया गया था।
- एक आँगन के चारों ओर कमरे होते थे। आँगन का प्रयोग संभवतः खाने-पकाने आदि कार्यों के लिए होता था।
- एकांतता के लिए भूमि तल पर बनी दीवारों में खिड़कियाँ नहीं होती थी। मुख्य द्वार से आंतरिक भाग दिखाई नहीं देता था।

(ग) स्नानघर व सीढ़ियाँ :-

- प्रत्येक घर में एक स्नानघर होता था। कुछ घरों में छत पर जाने के लिए सीढ़ियों के निर्माण के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।
- कुछ आवासों में कुएँ थे। कुएँ के प्रमाण ऐसे स्थानों पर प्राप्त हुए हैं जहाँ पर बाहर से आया जा सकता है। अतः अनुमान है कि इनका निर्माण राहगीरों के लिए किया गया होगा। मोहनजोदड़ो में कुओं की कुल संख्या लगभग 700 थी।

👉 **दुर्ग**

- दुर्ग पर ऐसी संरचनाओं के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं जिनका प्रयोग विशिष्ट सार्वजनिक प्रयोजनों के लिए किया जाता था। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

(क) मालगोदाम :-

- यह विशाल संरचना है जिसके नीचे के भाग ईंटों से बने होने के कारण विद्यमान हैं जबकि ऊपरी भाग सम्भवतः लकड़ी के बने होने के कारण नष्ट हो गए।

(ख) विशाल स्नानागार :-

- यह आँगन में बना एक आयताकार जलाशय है जो चारों ओर से एक गलियारे से घिरा हुआ है।
- जलाशय के तल तक जाने के लिए इसके उत्तरी भाग और दक्षिणी भाग में दो सीढियाँ बनी थीं। जलाशय के किनारों पर ईंटों को जमाकर तथा जिप्सम के गारे के प्रयोग से इसे जलबद्ध किया गया था। इसके तीनों ओर कक्ष बने हुए थे जिनमें से एक में एक बड़ा कुआँ था।

◆ जलाशय से पानी एक बड़े नाले में बह जाता था। इसके उत्तर में एक गली के दूसरी ओर एक अपेक्षाकृत छोटी सरचना थी जिसमें आठ स्नानघर बनाए गए थे। एक गलियारे के दोनों ओर चार-चार स्नानघर बने थे। प्रत्येक स्नानघर से नालियाँ, गलियारे के साथ-साथ बने एक नाले में मिलती थीं। ऐसा संकेत है कि इसका प्रयोग किसी प्रकार के विशेष आनुष्ठानिक स्नान के लिए किया जाता था।

हड़प्पा पुरास्थल एवं संबंधित देश

(1) पाकिस्तान

◆ हड़प्पा ◆ कोटदीजी ◆ मोहनजोदड़ो ◆ चंहुदड़ो ◆ बालाकोट ◆ सुतकागेंडोर [सबसे पश्चिम, ब्लूचिस्तान]

(2) भारत

◆ बनावली (फतेहाबाद), राखीगढ़ी (हिसार), मिताथल (भिवानी) ━ हरयाणा

◆ कालीबंगन ━ राजस्थान

◆ धौलावीरा, नागेश्वर, रंगपुर, लोथल ━ गुजरात

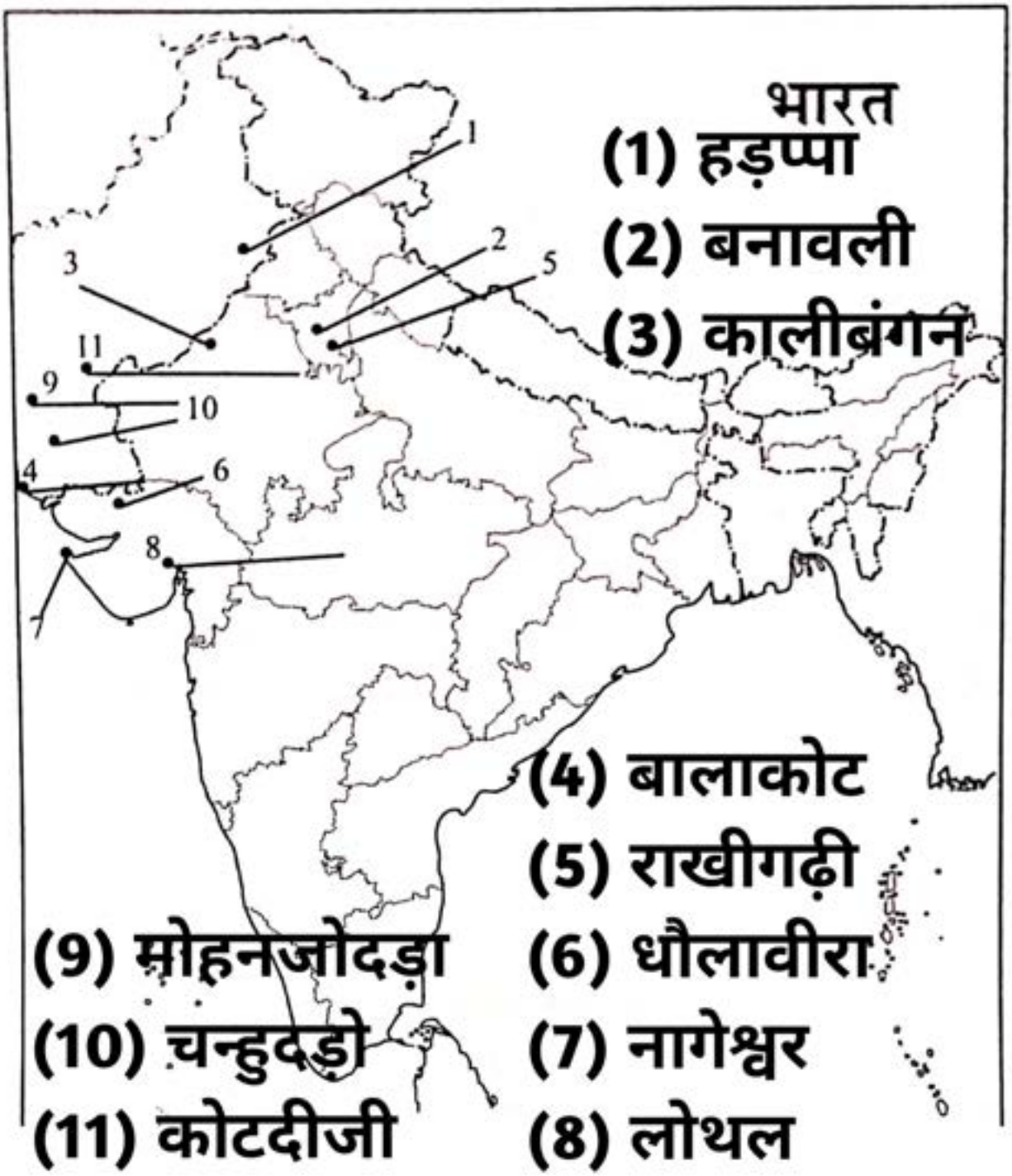

राजनीतिक जीवन या प्रशासनिक व्यवस्था

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों के राजनीतिकी जीवन या प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में लिखित समाग्री का आभाव है।
अत: प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में सही अनुमान लगाना मुश्किल।
कुछ इतिहासकारों द्वारा निम्न अनुमान लगाए गए हैं :-

(1) केंद्रिकृत शासन

◆ सिंधु घाटी सभ्यता के सभी भाग एक ही शासन व्यवस्था के अधीन थें।
◆ इस सभ्यता के सभी क्षेत्रों से मिले साक्ष्यों के आधार पर निम्न समानता पायी गई है :-
(a) पुरावस्तुओं में एकरूपता जैसे - मृदभाण्ड, मुहर, बाट, मनका
(b) योजनाबद्ध बस्तियों के साक्ष्य, बस्तियों को कच्चे माल के स्त्रोत के पास बसाया गया था।
(c) ईंट के आकार, भवन निर्माण और मूर्तिकला में एकरूपता।
(d) एक समान माप तौल की इकाई।

(2) डॉक्टर मैके

◆ एक प्रतिनिधि शासन संबंधित सभी कार्यों पर नियंत्रण रखता होगा।

(3) हंटर

◆ एक लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली रही होगी।

by - M H Rabbani

(4) व्हीलर और पीगट

◆ व्हीलर का मानना है कि समकालीन सुमेर और अक्कद की सभ्यता की तरह शासन व्यवस्था पुरोहित एवं राजाओं के हाँथ में रही होगी।
◆ पीगट के अनुसार शासन व्यवस्था पर पुरोहितों एवं धर्मगुरुओं का प्रभाव रहा होगा।

(5) कारपोरेशन

◆ कुछ इतिहासकारों का मानना है कि कारपोरेशन जैसी संस्था के हाँथ में शासन व्यवस्था रही होगी।

(6) अधिकारियों के माध्यम से शासन

◆ कुछ इतिहासकारों का मानना है कि राजा द्वारा अधिकारियों के माध्यम से शासन होता होगा।
◆ राजकीय भवन एवं विशाल अन्नागार के साक्ष्य संकेतित करते हैं कि राजकीय भवन में रहकर अधिकारी शासन करते होंगे।

(7) प्रसाद और पुरोहित राजा

◆ एक मत के अनुसार पुरातत्वविदों ने मोहनजोदड़ों से मिले एक विशाल भवन को प्रासाद की संज्ञा दी परन्तु इससे संबद्ध कोई भव्य वस्तुएँ नहीं मिली है।
◆ एक पत्थर की मूर्ति को 'पुरोहित - राजा' की संज्ञा दी गई थी और यह नाम आज भी प्रचलित है। क्योंकि पुरातत्वविद मेसोपोटामिया के इतिहास और वहाँ के 'पुरोहित-राजाओं से परिचित थे और यही समानताएँ उन्होंने सिंधु क्षेत्र में भी ढूंढी । परन्तु यहाँ यह उल्लेखनीय है कि हड़प्पाई सभ्यता में आनुष्ठानिक प्रथाएँ अभी तक समझी नहीं जा सकी और जो उनका निष्पादन करते थे उनके पास राजनीतिक सत्ता थी या नहीं. प्रमाणित नहीं हो सका है।

(8) शासक विहीन समाज

◆ दूसरे मत के अनुसार कुछ पुरातत्वविदों का विचार है कि हड़प्पाई समाज में शासक नहीं थे और सभी की सामाजिक स्थिति समान थी।

(9) विकेंद्रिकृत शासन

◆ एक अन्य विचार के अनुसार, कुछ पुरातत्वविदों का यह भी विचार है कि हड़प्पाई समाज में एक नहीं बल्कि कई शासक थे, जैसे मोहनजोदडो और हड़प्पा में अलग राजा होते थे।

● **निष्कर्ष :-**

👉 इतिहासकारों में मतभेद।

👉 **पुरावस्तुओं में समानता के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रशासनिक व्यवस्था एवं कार्य एक शासक के अधीन योग्य अधिकारियों के हाँथ में रहा होगा।**

👉 चूंकि हड़प्पा के लोग शांतिप्रिय थें। इसलिए विद्रोह की संभावना कम होने के कारण केंद्रिकृत शासन के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है।

सिंधु घाटी सभ्यता - धार्मिक जीवन

(1) मूर्ति पूजक

◆ **लिंग और योनी** के आकार की पत्थर की मूर्तियां प्राप्त हुई हैं।

◆ हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से आभूषण से लदी हुई स्त्री के चित्र प्राप्त हुए हैं जिन्हें **मातृ देवी या पृथ्वी माता** कहा जाता था।

◆ **पशुपति देवता :-**

👉 शिव पशुपति या अर्ध शिव के नाम से भी जाना जाता है।

👉 तीन मुख एवं योगाशन की मुद्रा

👉 सर पर दो सींग

👉 दोनो ओर चार पशु - हांथी, सिंह, बारहसिंघा, भैंस

◆ **पुरोहित :-**

👉 पुरुषों की दुर्लभ पत्थर से बनी मूर्तियां प्राप्त हुई हैं।

👉 एक हाँथ घुटनों पर रखे मानवीकृत मुद्रा में पुरुषों की मूर्ति।

(2) प्रकृति पूजक

👉 वृक्ष ➖ पीपल

👉 पक्षी ➖ फख्ता

👉 पशु ➖ चिता, बकरी, मगरमच्छ, घोड़ा, सांप

by - M H Rabbani

◆ अर्धदेवता के रूप में इन सभी की पूजा।

(3) अनुष्ठानिक कार्य

◆ विशाल स्नानागार तथा कालीबंगन एवं लोथल से प्राप्त वेदियाँ इस बात की ओर संकेत करती हैं कि ये लोग अनुष्ठानिक कार्य एवं यज्ञ करते थें।

● **निष्कर्ष :- रूढ़िवादी एवं अन्धविश्वासी**

कृषि प्रोद्योगिकी

अनाज, जैसे गेहूं, जौ, दाल आदि के साक्ष्य प्राप्त होने के बावजूद उनकी कृषि विधियों की स्पष्ट जानकारी नहीं है। परंतु विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जाते हैं-

(i) बैलों का प्रयोग :- मुहरों के रेखांकन तथा मृण्मूर्तियों के आधार पर लगता है कि उनको वृषभ की जानकारी थी। कृषि के लिए बैलों का प्रयोग किया जाता था।

(ii) हल का प्रयोग :- चोलिस्तान और बनावली (हरियाणा) में मिट्टी से बने हल के प्रतिरूप के आधार पर पता चलता है कि वह हल का प्रयोग करते थे। कालीबंगन (राजस्थान) में जुते हुए खेतों का साक्ष्य प्राप्त हुआ है।

(iii) दो फसलें उगाना :- कालीबंगन में खेत में हल की रेखाएँ समकोण पर एक-दूसरे को काटती हैं। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि एक साथ दो अलग फसलें उगाई जाती थीं। (iv) फसलों की कटाई के औजारों की जानकारी प्राप्त नहीं हुई है।

(υ) सिंचाई :- अफगानिस्तान के शोर्तुधई में नहरों के अवशेष प्राप्त हुए हैं परंतु पंजाब और सिंध में कोई प्रमाण प्राप्त नहीं हुआ है। गुजरात (धौलावीरा) में जलाशय होने से अनुमान है कि इनका प्रयोग सिंचाई के लिए किया जाता होगा। अतः यह अनुमान लगाया जाता है कि अर्ध-शुष्क क्षेत्रों के कारण सिंचाई नहरों, कुओं और जलाशयों से की जाती होगी।

सिंधु घाटी सभ्यता - आर्थिक जीवन

- कृषि
- पशुपालन
- शिल्प उत्पादन
- व्यापार

सिंधु घाटी सभ्यता - सामाजिक जीवन

(1) समान्यतः लोग कृषि किया करते थें।
(2) पशुपालन [जीवन निर्वाह Topic देखें]
- घोड़े के बारे में जानकारी नहीं थी।

(3) ऊनि एवं सूती वस्त्र दोनो पहनते थें।
(4) स्त्रियां और पुरुष दोनों आभूषण पहनते थें।
(5) स्त्रियां केश - कलाप एवं श्रृंगार से परिचित थीं।
(6) मनोरंजन का साधन :-
- बच्चों के लिए खिलौना
- व्यस्क - संगीत, नृत्य, चौपड़, पशु पक्षियों की लड़ाई

(7) भोजन :-
- समान्यतः सादा भोजन
- गेहूं, दूध, दुग्ध उत्पाद, फल सब्जी मुख्य भोजन

शिव की कल्पना

- ऋग्वेद में शिव के लिए रूद्र शब्द का प्रयोग जबकि सिंधु सभ्यता में पशुपति या अर्धशिव शब्द का प्रयोग।
- ऋग्वेद में शिव को योगी के रूप में नहीं दिखाया गया है जबकि सिंधु सभ्यता में शिव का चित्रण योगी के रूप में किया गया।
- अतः **सिंधु घाटी सभ्यता के शिव की कल्पना वैदिक काल से अलग।**

सिंधु सभ्यता में कला

कला एवं शिल्प के क्षेत्र में विशेष उन्नति।
इनकी शिल्पकला उपयोगिता के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण।
दैनिक जीवन को सुधारने के लिए शिल्पकला का प्रयोग।
प्रमुख कलाएं इसप्रकार हैं :-

by - M H Rabbani

मूर्ति कला

by - M H Rabbani

- उच्च कोटि की मूर्तिकला
- इस सभ्यता के लोग मूर्ति निर्माण में दक्ष थें।

👉 **दो प्रकार की मूर्तियां :-**

(a) देवी देवता ➖ धार्मिक महत्व की

(b) स्त्री-पुरुष एवं पशु पक्षी ➖ साधारण महत्व की

👉 **मूर्ति निर्माण में प्रयुक्त पदार्थ :-**

(a) धातु (b) मिट्टी

👉 **कला की दृष्टि से दो महत्वपूर्ण मूर्तियां :-**

(a) लाल पत्थर से बना हुआ मानव शरीर

(b) दाँयीं टांग उठाये हुए नृत्य मुद्रा में सम्भवतः नटराज शिव की मूर्ति

- उपरोक्त दोनों मूर्तियों के गर्दन और कंधों पर छिद्र है ताकि सर और बाजुओं को अलग से जोड़ा जा सके।

👉 **यूनानी कला से समानता :-**

- भावना एवं सरलता के दृष्टिकोण से एक समान।

👉 **वस्तुतः मूर्तिकला की प्रमुख विशेषता :-**

(a) सरलता (b) सजीवता (c) स्वभाविकता (d) यथार्थता

चित्र कला

- सिंधु सभ्यता के लोग चित्रकारी के शौक़ीन थें।
- बर्तन एवं मुहरों पर खुदे हुए चित्र।

👉 **दो प्रकार के चित्र :-**

(a) ज्यामितीय चित्र ➖ रेखाओं की प्रधानता

(b) प्राकृतिक चित्र ➖ पशु, पक्षी, बेल, पुष्प

- बर्तनों पर पशु पक्षियों एवं प्रकृति के विभिन्न वस्तुओं के चित्र बनाए जाते थें।

लेखन कला

- इस सभ्यता के लोग लेखन कला से परिचित थें।
- लिपि :- चित्राक्षर, रहस्यमयी, प्रमाणिक चिन्हो का प्रयोग,375 से 400 चिन्ह, वर्णमलीय नहीं।
- इस लिपि के पढ़े जाने के बाद इनके जातिगत संबंधों का पता लग सकता है।

मिट्टी का बर्तन बनाने की कला

- मिट्टी के बर्तन चाक पर बने होते थें।
- रूप एवं आकार की दृष्टि से विविधता होती थी।
- रंगीन मिट्टी के बर्तन।
- बर्तनों पर चमकीला लेप चढ़ाने की प्रथा।
- पत्थरों को पिसकर एवं उसमे द्रव्य मिलाकर चिकने बर्तन बनाए जाते थें।
- लाल रंग के बर्तनों पर काले रंग की चित्रकारी।
- पतली गर्दन वाले बड़े आकार के घड़े।
- बर्तनों पर वृक्षों, त्रिभुज, वृत्त, बेल, पुष्प, पशु, पक्षी इत्यादि के चित्र
- रोगन एवं पॉलिश किए गए बर्तनों के निर्माण की शरुवात सम्भवतः सबसे पहले इसी सभ्यता में हुई होगी।

मुहर निर्माण कला

👉 **मुहर निर्माण में प्रयुक्त पदार्थ :-**

🔹 मिट्टी 🔹 हाथी दाँत 🔹 पत्थर 🔹 टेराकोटा 🔹 सेलखड़ी 🔹 चर्ट 🔹 कॉपर 🔹 फयॉन्स 🔹 सोना 🔹 चाँदी इत्यादि

👉 **मुहरों का आकार :-**

🔹 विभिन्न आकार के 🔹 सबसे अधिक गोलाकार

👉 **मुहरों पर चित्र :-**

(a) बैल, भैंस, हांथी, बारहसिंघा, इत्यादि पशु

(b) स्वास्तिक का चिन्ह

🔹 इनके मुहरों पर स्वास्तिक का चिन्ह धार्मिक महत्व को संकेतित करता है।

🔹 अनुमान लगाया जाता है कि स्वास्तिक के चिन्ह का प्रयोग मोहनजोदड़ो के लोग सम्भवतः ताबीज की तरह करते थें।

🔹 जैसे :- **मोहनजोदड़ो से पशुपति के चित्र वाला मुहर** प्राप्त हुआ है।

बाट निर्माण कला

🔹 बाट सूक्ष्म या **परिशुद्ध प्रणाली** द्वारा नियंत्रित थें।

🔹 **चर्ट** नामक पथर से निर्मित।

🔹 समान्यतः चिन्ह रहित **घनाकार** होते थें।

🔹 बाट पर **दो प्रकार के मानदंड** का प्रयोग :-

(a) निचला मानदंड ➖ द्विअधारी (1,2,4,8,16.......12800 तक)

(b) ऊपरी मानदंड ➖दशमलव प्रणाली पर आधारित

🔹 छोटे बाटों का प्रयोग सम्भवतः आभूषण, मनकों या बहुमूल्य वस्तुओं को तौलने में किया जाता था।

🔹 धातु द्वारा बने तराजू के पलड़ो के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं।

मुहर एवं मुद्रांकन

👉 **उद्देश्य :-**

🔹 मुहर तथा मुद्रांकन का प्रयोग लम्बी दुरी के संपर्क एवं व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए किया जाता था।

👉 **मुद्रांकन का तरीका :-**

🔹 समान को एक थैले में रखकर उसके मुख को रस्सी से बांध दिया जाता था और गांठ पर गिली मिट्टी लगाकर मुहर लगा दिया जाता था।

👉 **मुहर एवं मुद्रांकन से लाभ :-**

(a) इससे प्रेषक (भेजने वाले) की पहचान हो जाती थी।

(b) थैला बिना मुहर तोड़े खोला नहीं जा सकता था, इसप्रकार भेजा हुआ समान सुरक्षित पहुँच जाता था।

🔹 अक्षुण मुद्रांकन का अर्थ वस्तुओं से कोई छेड़ छाड़ नहीं।

by - M H Rabbani

जल निकास प्रणाली

👉 **नियोजित जल निकास प्रणाली।**
👉 सड़क एवं गलियों का निर्माण **ग्रिड पद्धति** के आधार पर किया गया था।
👉 सड़क और गलियाँ एक दूसरे को **समकोण** पर काटती थीं।
👉 ऐसा प्रतीत होता है कि पहले नालियों के साथ गलियों का निर्माण किया जाता था और फिर उनके अगल बगल में आवासों का का निर्माण किया गया था।
👉 घर की एक दीवार नालियों से सटी होती थी जिससे घर का गंदा पानी बाहर निकलता था।

नालियों की विशेषता (मैके के अनुसार)

- अब तक की खोजी गई सर्वथा संपूर्ण प्राचीन प्रणाली।
- हर आवास और गली को नाली से जोड़ा गया था।
- **मुख्य नाला गारा और ईंट से** बना होता था। नालियों को **ईंट और चुना पथर की पट्टीका से** इसप्रकार **ढका** गया था कि साफ किया जा सके।
- घरों की नालियाँ पहले **मलकुण्ड या हौदी** में मिलती थी जिसमे ठोस पदार्थ जमा हो जाता था।
- बहुत लम्बे नालों में बीच - बीच में भी हौदियाँ बनाई गई थी ताकि सफाई की जा सके।
- छोटे एवं बड़े सभी नगर (बस्तियों) में ये व्यवस्था पायी गई।
- **लोथल में आवास कच्ची ईंट के जबकि नालियों का निर्माण पक्की ईंट के द्वारा किया गया था।**

🔴 **निष्कर्ष :- वस्तुतः हड़प्पा सभ्यता के शहरों की जल निकास प्रणाली, उनके नियोजित नगर होने का प्रमाण है।**

हड़प्पा सभ्यता की बस्तियां

दुर्ग

- छोटा क्षेत्र
- ऊँचा
- पश्चिमी भाग

निचला शहर

- बड़ा क्षेत्र
- निचा
- पूर्वी भाग

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

by - M H Rabbani

दुर्ग

- कच्ची ईंट के चबूतरे पर निर्मित।
- दुर्ग को चारो तरफ से दीवारों से घेरा गया था।

👉 **दुर्ग की विशेषताएं**

दुर्ग पर बनी निम्नलिखित दो संरचनाओं का प्रयोग सम्भवतः विशेष सार्वजनिक कार्यों के लिए किया जाता होगा :-

(1) मालगोदाम

- यह एक विशाल संरचना है।
- इसका ईंट से निर्मित निचला भाग बचा है।
- लकड़ी से निर्मित ऊपरी भाग नष्ट हो चूका था।

(2) विशाल स्नानागर

- दुर्ग के आँगन में एक विशाल आयतकार जलाशय।
- इसमें उतरने के लिए उत्तर तथा दक्षिण छोर पर सीढ़ियां।
- जलाशय के किनारों को जिप्सम के गारे से ईंट को जमाकर बनाया गया था।
- जलाशय के तीन तरफ कमरा बना था, इनमें से एक में बड़ा सा कुआँ था।
- मुख्य स्नानगार के उत्तर में एक गली में छोटे छोटे 8 स्नानागर थें।
- इसके अतिरिक्त एक पतले से गलियारे के दोनों तरफ चार - चार स्नानागार।
- इन सभी स्नानागार से निकलने वाला पानी गलियारे के साथ बने नालियों में मिल जाता था।

👉 सम्भवतः इसका **प्रयोग अनुष्ठानिक स्नान के लिए** किया जाता होगा।

निचला शहर

- निचले शहर के आवासीय भवन गृह स्थापत्य के बेहतरीन उदाहरण हैं।
- कहीं कहीं निचला शहर भी दीवारों से घिरा था।
- कई भवनों को ऊँचे चबूतरे पर बनाया गया था जो नींव का कार्य करते थें।

👉 **सिंधु घाटी सभ्यता में गृह स्थापत्य की विशेषताएं :-**

(1) घरों के केंद्र में आँगन होता था जिसके चारो तरफ कमरे बने होते थें।

(2) आँगन का प्रयोग खाना पकाने के लिए तथा गर्मियों के मौसम में आराम करने के लिए किया जाता था।

(3) घर का मुख्य द्वार इसप्रकार बनाया जाता था कि घर का आंतरिक भाग और आँगन बाहर से दिखाई न दे।

(4) निचली तल पर बनाए गए दीवारों में खिड़कियां नहीं होती थीं।

- **3+4= गोपनीयता को पसंद करते थें**

(5) प्रत्येक घर में ईंट का फर्श वाला स्नानागर होता था जिसकी नालियाँ सड़क की नालियों से जुडी थीं।

(6) कुछ घरों के बाहर मुसाफिरों के लिए कुएँ बने होते थें।

(7) कुछ घरों में दूसरे तल या छत पर जाने के लिए सीढ़ियां बनी होती थीं।

by - M H Rabbani

पुरातत्त्वविदों द्वारा वस्तुओं का वर्गीकरण

👉 **वर्गीकरण का आधार**

(1) प्रयुक्त पदार्थ के आधार पर

(2) उपयोगिता के आधार पर

🔹 पुरातत्वविद् खोजों के वर्गीकरण में प्रयुक्त पदार्थों के आधार पर तथा उपयोगिता के आधार पर उनका मूल्यांकन करते हैं। इसमें खोज की उपयोगिता की तुलना वर्तमान समय से की जाती है।

🔹 पुरातत्वविदों को यह तय करना पड़ता है कि कोई पुरावस्तु एक औजार है या एक आभूषण है या फिर दोनों अथवा आनुष्ठानिक प्रयोग की कोई वस्तु।

🔹 किसी पुरावस्तु की उपयोगिता की समझ अक्सर आधुनिक समय में प्रयुक्त वस्तुओं से उनकी समानता पर आधारित होती है-मनके चक्कियाँ, पत्थर के फलक तथा पात्र इसके स्पष्ट उदाहरण हैं।

🔹 कभी-कभी पुरातत्वविदों को अप्रत्यक्ष साक्ष्यों का सहारा लेना पड़ता है। उदाहरणतया कुछ हड़प्पा स्थलों से कपास के टुकड़े मिले हैं, पर पहनावे के विषय में जानने के लिए हमें अप्रत्यक्ष साक्ष्यों, जैसे मूर्तियों में चित्रण पर निर्भर रहना पड़ता है।

विद्या दृष्टि
The Vision of Education

👉 **पुरावस्तुओं का मुख्य वर्गीकरण :-**

(1) साधारण उपयोग की वस्तुएँ

🔹 साधारण उपयोग की वस्तुएँ सभी जगह पायी जाती हैं।

🔹 समाज के सभी वर्ग द्वारा उपयोग में लायी जाती है।

🔹 जैसे :- चक्कीयां, मृदभाण्ड, सुइयाँ, झाँवा, पत्थर, मिट्टी से निर्मित वस्तुएँ इत्यादि।

(2) विलासिता वस्तुएँ

🔹 दुर्लभ एवं महँगी वस्तुओं को विलासिता की वस्तु मानी जाती है।

🔹 जैसे :-

(a) सोने का आभूषण

(b) फयाँन्स से बने लघुपात्र

🔺 घिसे हुए रेत या बालू, रंग और चिपचिपे पदार्थों के मिश्रण को पकाकर फयाँन्स का निर्माण किया जाता है।

🔺 हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे बड़े नगरों में सुगंधित द्रव्यों (इत्र) को रखने के लिए फयाँन्स का प्रयोग होता था।

👉 निष्कर्ष :-

🔺 बड़े - बड़े नगरों से स्वर्णनाभूषण संचयों के रूप में प्राप्त हुए हैं।

🔺 हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से विलासितापूर्ण वस्तुओं के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं जबकि छोटे - छोटे शहरों से नहीं।

🔺 अतः बड़े नगरों में तुलनात्मक रूप से अमीर एवं विलासितापूर्ण जीवन बिताने वाले लोग रहते थें।

समाजिक एवं आर्थिक विविधता

पुरातत्त्वविद हड़प्पाई समाज में व्याप्त समाजिक एवं आर्थिक विविधताओं (विषमता) का पता लगाने के लिए निम्नलिखित को आधार बनाते हैं :-

(1) शवाधान पद्धति

(2) पुरावस्तुओं का वर्गीकरण

by - M H Rabbani

सिंधु सभ्यता में शवाधान पद्धति

👉 मृतकों को गर्त में दफनाया जाता था।
👉 **गर्त की संरचना में विविधता आर्थिक विषमता को संकेतित करता है।**
👉 कुछ कब्रों के सतह को ईंट से चिकना किया गया था अधिकांश को नहीं। यह **अमीर और गरीब वर्ग होने का संकेत** है।
👉 कुछ कब्रों के साँथ ➖ मृदभाण्ड, तांबे का दर्पण, संख के छल्ले, मनके, मनके से बने आभूषण को दफनाये जाने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं जो संकेतित करते हैं :-

(a) रूढ़िवादी मान्यताओं की ओर संकेत
(b) पुनर्जन्म में विश्वास की ओर संकेत
(c) मृत्यु के बाद इन चीजों के उपयोग की मान्यता।

👉 पुरुष और स्त्री दोनों के शवाधान से आभूषण के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
👉 1980 के दशक में हड़प्पा के कब्रिस्तान में खुदाई से प्राप्त
(a) एक पुरुष की खोपड़ी
(b) खोपड़ी के पास संख के तीन छल्ले, जैसपर (उपरत्न), मनकें

🔺**निष्कर्ष :-**
🔹 अतः शवाधान से आर्थिक एवं समाजिक जीवन की जानकारी मिलती है।
🔹 आर्थिका विषमता का अनुमान लगाया जा सकता है।

पुरातत्त्वविदों द्वारा इतिहास का पूनर्निमाण

पुरातत्त्वविदों द्वारा पुरातत्विक खुदाई से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर प्राचीन सभ्यता का इतिहास लिखा जाता है।

👉 **पुरातत्विक साक्ष्य**
(a) विभिन्न वस्तुओं के अवशेष
(b) मूर्तिकला, चित्रकला, भवनिर्माण कला से संबंधित अवशेष
(c) अस्थिपंजरों का अध्ययन

👉 **पुरातत्त्वविद अतीत का पूनर्निमाण निम्न प्रकार से करते हैं :-**
(i) हड़प्पाई लिपि से इस सभ्यता के विषय में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती। ये केवल **भौतिक साक्ष्य** हैं जो पुरातत्वविदों को हड़प्पाई जीवन को पुनर्निर्मित करने में सहायक हैं। यह वस्तुएँ मृद्भाण्ड, औजार, आभूषण व घरेलू सामान हो सकते हैं।
(ii) **उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों** में जैविक पदार्थ नष्ट हो जाते हैं परन्तु पत्थर, पकी मिट्टी तथा धातु की वस्तुएँ बच जाती हैं।
(iii) टूटी हुई अथवा अनुपयोगी वस्तुएँ ही फेंकी जाती थीं अन्य वस्तुएँ पुनःचक्रित की जाती थीं। कुछ खोजें प्रारूपिक की बजाए संयोगिक होती हैं।
(iii) खोजों का वर्गीकरण ➖ पुरातत्वविद खोजों का वर्गीकरण करते हैं। उसमें प्रयुक्त पदार्थों के आधार पर तथा उपयोगिता के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है। इसमें खोज की उपयोगिता की तुलना वर्तमान समय से की जाती है, जैसे मनके व चक्कियों। उपयोगिता में वह जांच करते हैं कि वस्तु घर में, नाले में या कब्र
में, कहाँ मिली थी।
(iv) अप्रत्यक्ष साक्ष्यों का प्रयोग ➖ पुरातत्वविद अप्रत्यक्ष साक्ष्यों, जैसे पहनावे के बारे में मूर्तियों के चित्रण से जानकारी प्राप्त करने का प्रयोग भी करते हैं।

by - M H Rabbani

(ʊ) असामान्य और अपरिचित वस्तुओं की व्याख्या :-

(क) असामान्य और अपरिचित वस्तुओं की व्याख्या धार्मिक प्रथाओं आदि के रूप में की जाती है, जैसे आभूषणों से लदी हुई नारी मृण्मूर्तियों को मातृ देवी मानना या मानकीकृत मुद्रा में पुरुष को पुरोहित राजा मानना इसके उदाहरण हैं।

(ख) विशाल स्नानागार और कालीवगन तथा लोथल से मिली वेदियाँ भी आनुष्ठानिक महत्त्व की हैं।

(ग) मुहरों, जिन पर सम्भवतः अनुष्ठान के दृश्य बने हैं, से धार्मिक आस्थाओं और प्रथाओं को पुनर्निर्मित करने में सहायता मिलती है।

(घ) पेड-पौधों वाली मुहरें प्रकृति की पूजा का संकेत हैं।

(ङ) कुछ मुहरों पर पालथी मर कर योगी की मुद्रा में आकृति है जिसको 'आद्य शिव ' की संज्ञा दी गई है।

(च) पत्थर की शंक्वाकार वस्तुओं को लिंग के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

सिंधु सभ्यता ʊ/s वैदिक सभ्यता

समानता

(1) पालतू जानवर

- भेड़, बकरी, कुत्ता, बैल, गाय इत्यादि का दोनों सभ्यताओं में पालन।
- इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि दोनों सभ्यता के लोग एक साथ रहे होंगे या सम्भवतः आर्य लोग इनके कुछ समय बाद के होंगे परन्तु ये एक दूसरे को जानते अवश्य थें।

(2) धातु एवं आभूषण

- सोना चाँदी का प्रयोग दोनों सभ्यता में किया जाता था।
- अंगूठी एवं गले का हार बनाने के पद्धति दोनों सभ्यताओं कि लगभग एक जैसी।

(3) रहन - सहन एवं पहनावा

- स्त्रियों का रहन सहन एवं वेशभूषा लगभग एक जैसा।
- दोनों सभ्यताओं में बुनाई का काम होता तथा रुई एवं ऊन का प्रयोग।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

असमानता

(1) आर्य ग्रामीण सभ्यता जबकि सिंधु सभ्यता नगरीय सभ्यता।

(2) आर्य सुरवीर जबकि ये शांतिप्रिय।

(3) आर्य अर्थशास्त्र से परिचित जबकि ये अपरिचित।

(4) आर्य गाय की पूजा करते थें जबकि सिंधु सभ्यता के लोग सांढ को पवित्र मानते थें।

(5) आर्य घोड़े से परिचित थें जबकि ये नहीं।

(6) सिंधु घाटी के लोग मूर्ति पूजक थें जबकि आर्य सिर्फ प्रकृति की पूजा करते थें।

(7) आर्यों के मनोरंजन का साधन शिकार जबकि इनका नाच गाना।

सिंधु / हड़प्पा सभ्यता की देन या विशेषता

विभिन्न कास्यपुगीन सभ्यताओं मे समानता और एकरूपता होने के बावजूद भी हड़प्पा सभ्यता की कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जो इसे अन्य सभ्यताओं से अलग करती है।

(1) सुनियोजित नगर

(2) सुनियोजित जल निकास प्रणाली

(3) उपयोगी कला

by - M H Rabbani

(4) विकसित धर्म :-

👉 इनके द्वारा अपनाये गए विश्वास, पूजा के ढंग, धार्मिक रीति रिवाज इत्यादि अभी भी भारतीय समाज के अंग है।

👉 दुसरी सभ्यताओं का वहाँ के लोगों पर कोई विश्वास प्रभाव नहीं था।

👉 शिव और पृथ्वी की पूजा, पीपल पूजा, सूर्य पूजा, मूर्ति पूजा जो आज हिन्दू धर्म की मुख्य विशेषता है इन्हीं की देन है।

5 नागरिक प्रबंधन :-

👉 स्थान - स्थान पर पीने के पानी का प्रबंध

👉 गलियों में रोशनी की व्यवस्था

👉 धर्मशाला या आश्रम

👉 गंदगी को शहर से बाहर ले जाकर फेकते थे

👉 स्वास्थ्य के प्रति जागरुक थे, जैसे बर्तन बनाने की भट्टी शहर से बाहर होती थी।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

सिंधु / हड़प्पा सभ्यता की खोज

👉 लगभग **1856** के आस पास **लाहौर और करांची के बीच रेलवे लाइन** बिछाने के लिए उत्खन्न कार्य शुरू हुआ।

👉 इस दौरान कुछ ऐसे अवशेष मिले जिसे कर्मचारियों ने खंडहर समझ लिया और यहाँ की हजारों ईंट उखार कर ले गए, जिनका इस्तेमाल रेलवे लाइन बिछाने में किया गया ।

👉 उन्हें यह समझ नहीं आया कि यह किसी प्राचीन सभ्यता के अवशेष हैं।

★ जॉन मार्शल के नेतृत्व में 1920 के दशक में खुदाई :-

🔹 **1921 में दयाराम साहनी ने हड़प्पा नामक स्थल** की खुदाई करवायी जहाँ से उन्हें मुहरें प्राप्त हुई।

🔹 **1922 में रारवाल दास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो** नामक स्थान की खुदाई करवाई और इन्हें भी वहाँ से वैसी ही मुहरें प्राप्त हुई जैसी हड़प्पा से हुई थी।

🔹 अतः अनुमान लगाया गया कि ये दोनों क्षेत्र एक ही संस्कृति के भाग होगें।

🔹 **1924 ई0** में भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण (ASI) के डायरेक्टर जनरल **सर जॉन मार्शल** ने एक **नयी सभ्यता के खोज की घोषण की** जो वैदिक सभ्यता (गंगा घाटी सभ्यता) से भी प्राचीन थी।

🔺 इसके बारे में **S. N. Ray** ने अपनी पुस्तक **"The Story of Indian Archaeology"** में लिखा कि विश्व को न केवल एक नए सभ्यता की जानकारी मिली बल्कि यह मेसोपोटामिया के समकालीन थी।

कनिंघम और भारतीय पुरातत्विक सर्वेक्षण

👉 भारतीय पुरातत्त्व विभाग (ASI - Archaeology Survey of India) के **पहले डायरेक्टर जनरल** सर एलेकजेंड्र कनिंघम थें।

👉 अतः इन्हे **भारतीय पुरातत्त्व का जनक** माना जाता है।

by - M H Rabbani

कनिंघम का योगदान

(1) 19 वीं शताब्दी के मध्य मे पुरातात्विक उत्खनन कार्य आरंभ किया।
(2) **लिखित स्रोतों का प्रयोग** अधिक पसंद करते थे। कनिंघम की रूचि आरम्भिक ऐतिहासिक तथा उसके बाद के कालों से संबंधित पुरातत्त्व में थी।
(3) **आरंभिक बस्तियों की पहचान** के लिए पहले से खोजी गई ऐतिहासिक श्रोतों विशेषकर **चीनी बौद्ध तीर्थयात्रीयों'** (चौथी से सातवीं शताब्दी के बीच) के यात्रा वृतांत का प्रयोग किया।
(4) कनिंघम ने अपने सर्वेक्षण के दौरान मिले अभिलेखों का **संग्रहण, प्रलेखन तथा अनुवाद** करवाया ।
(5) उन्होंने उत्खनन के समय **सांस्कृतिक महत्व** की पुरावस्तुओं को खोजने का प्रयास भी किया।

कनिंघम का भ्रम

- हड़प्पा जैसे पुरास्थल चीनी यात्रियों के यात्रा कार्यक्रम के हिस्सा थे ही नहीं फिर भी इनके यात्रा वृतांत पर ध्यान दिया ।
- एक ब्रिटिश अधिकारी द्वारा इन्हें एक हड़प्पाई मुहर दिया गया जिसे ये पहचान न पाएं। इन्होने इसे अलग कालखंड का बताया।
- **कनिंघम का मानना था कि भारत में सभ्यता का शुरूआत गंगा घाटी से हुआ है अतः हड़प्पा के महत्व को न समझ सकें।**

👉 निष्कर्ष :- कनिंघम सही निष्कर्ष निकालने में असमर्थ थें।

सर जॉन मार्शल और भारतीय पुरातत्विक सर्वेक्षण

👉 ASI के डायरेक्टर जनरल
👉 सिंधु घाटी सभ्यता के खोज की घोषणा की।

सर जॉन मार्शल का योगदान

जॉन मार्शल ने भारतीय पुरातत्व में व्यापक परिवर्तन निम्नलिखित प्रकार से किया:-
(क) वह भारत में कार्य करने वाले **पहले पेशेवर पुरातत्वविद्** थे।
(ख) उनको यूनान तथा क्रीट में कार्यों का अनुभव था।
(ग) कनिंघम की तरह उन्हें भी आकर्षक खोजों में दिलचस्पी थी, पर उनमें **दैनिक जीवन की पद्धतियों** की जानने की उत्सुकता भी थी।
(घ) जॉन मार्शल की **कार्य प्रणाली में एक दोष** था। वह अलग-अलग स्तरों से संबद्ध होने पर भी एक इकाई विशेष से प्राप्त सभी पुरावस्तुओं को सामूहिक रूप से वर्गीकृत करते थे।
(ङ) पुरास्थल के **स्तर विन्यास को अनदेखा कर टिले के रूप में उतखन्न** करने का प्रयास किये जिसके कारण बहुमूल्य जानकारियां हमेशा के लिए विलुप्त हो गईं।

👉 **व्हीलर**

- 1944 में डायरेक्टर जनरल बनने के बाद व्हीलर ने इनकी कमियों को दूर करने का प्रयास किया।
- व्हीलर ने टीले के स्तर विन्यास को महत्व दिया तथा इसमें **सैनिक परिशुद्धता का समावेश** भी किया।

by - M H Rabbani

सिंधु घाटी सभ्यता का पतन

👉 **पतन की प्रक्रिया (1900 ई. पूर्व के बाद आए बदलाव)**

(1) भौतिक संस्कृति में बदलाव आया। बाटों, मुहरों, मनकों जैसी विशेष पुरावस्तुओं का खत्म होना।
(2) लेखन, लंबी दूरी का व्यापार तथा शिल्प विशेषज्ञता की समाप्ति।
(3) भवन निर्माण तकनीकों का ह्रास हुआ, सार्वजनिक संरचनाओं का निर्माण बंद हो गया।
(4) ग्रामीण जीवन शैली उभर कर आयी जिसे उत्तर हड़प्पा या अनुवर्ती संस्कृतियाँ कहा जाता है।
(5) मानकीकृत बाट प्रणाली की जगह पर स्थानीय बाटों का प्रयोग होने लगा।

👉 **पतन के कारण**

- बाढ़
- नदी का सुखना या मार्ग बदलना
- वनों की कटाई
- मृदा का अत्यधिक उपयोग
- आर्यो का आक्रमण

👉 **निष्कर्ष :-**

- इनमें से कोई भी एक कारण इतनी बड़ी सभ्यता के पतन का कारण नहीं बन सकता।
- सम्भवतः एकीकरण के तत्वों में कमी के कारण धीरे - धीरे सिंधु घाटी सभ्यता नगरीय सभ्यता से ग्रामीण सभ्यता में परिवर्तित हो गया और उसका पतन हो गया।

सिंधु घाटी सभ्यता में कृषि औजार

- धातु के औजार
- लकड़ी के हत्थों से बनाए गए पत्थर के फलकों का प्रयोग फ़सल कटाई में।

सिंधु घाटी सभ्यता का क्षेत्रीय विस्तार

- उत्तर में 'मांडा' (जम्मू कश्मीर) तक
- दक्षिण में 'दैमाबाद' (महाराष्ट्र) तक
- पूर्व में 'आलमगीरपुर' (उत्तरप्रदेश) तक
- पश्चिम में 'सुत्कागेंडोर' (पाकिस्तान) तक

by - M H Rabbani

सिंधु / हड़प्पा सभ्यता का भूगोल

सिंधु / हड़प्पा सभ्यता के बंदरगाह पुरास्थल

🔹 लोथल 🔹 कुंटसी 🔹 सुरकोटाडा 🔹 अल्लाहदिनों 🔹 बालाकोट 🔹 नागेश्वर 🔹 सुतकागेंडोर

👉 व्यापार मेसोपोटामिया के उर नगर के साथ जहाँ से हड़प्पा सभ्यता की मुहर प्राप्त हुई है।

स्वतंत्र भारत में सिंधु सभ्यता के पुरास्थल

(1) धैलावीरा :- 1920 के दशक में **R. S. Bisht** के द्वारा खोजा गया।

(2) राखिगढ़ी :- 1997 में **अमरेंद्र नाथ** द्वारा खोजा गया। 2014 से सबसे बड़ा भारत में सिंधु सभ्यता का पुरास्थल।

कुछ तथ्य

- जलाशय के साक्ष्य - धौलावीरा
- शिल्प उत्पादन का प्रमुख केंद्र - चंहूदड़ो
- सिंधु सभ्यता के पुरास्थलों की संख्या - 2000 से अधिक
- अफ़ग़ानिस्तान का एक मात्र पुरास्थल - शोतुर्घई
- वह नगर जहाँ से दुर्ग के साक्ष्य नहीं प्राप्त - चंहूदड़ो
- लोथल के दुर्ग को चारदिवारी से नहीं घेरा गया था।

संस्कृति

पुरातत्त्वविद 'संस्कृति' शब्द का प्रयोग पुरावस्तुओं के एक ऐसे समूह के लिए करते हैं जो एक विशिष्ट शैली के होते हैं और समान्यतः एक साथ, एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र तथा काल - खंड से संबंध पाए जाते हैं।

विद्या दृष्टि, C-136A, Laxmipark, Near M. S. Memorial Public School, Nangloi, Delhi -110041
Contact : 8700467219

YouTube
@vidyadrishti

भारतीय इतिहास

के कुछ विषय भाग - 1

ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ
(हड़प्पा सभ्यता)

विद्या दृष्टि

The Vision Of Education

CLASSES AVAILABLE :-

6th to 10th

- Maths
- Science
- English
- Sst

11th & 12th

- Pol. Science
- History
- Economics
- Accounts
- Maths
- English
- sociology

C-136A, Laxmipark, Near M. S. Memorial Public School, Nangloi, Delhi - 110041

M H Rabbani : 8700467219

(Chief Mentor & Coordinator)

@vidyadrishti